International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 404-406

'दहशतगर्द' उपन्यास में व्यक्त विभाजित वर्ग की पीड़ा का चित्रण

राजेंद्र शर्मा
गांव व डा० जुड्डी, कोसली, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

उपन्यासकार देशदीपक त्रिपाठी रचित उपन्यास 'दहशतगर्द' 'वतन छुटने की पीड़ा तथा 'विभाजित वर्ग के भविष्य की कुण्ठा' से जुड़े के घटनाक्रम को समेटे हुए है। इसमें लाहौर की राजनीतिक-सामाजिक जिंदगी का तथा विभाजन के साथ ही उसके टूटने-बिखरने और चूर-चूर हो जाने का वर्णन है। इसमें विभाजन के बाद से १९५७ ई० तक तथा बाद के अस्त-व्यस्त, केन्द्रविच्युत, जनांर्कीण जीवन का यथार्थ और प्रमाणिक वर्णन है। 'दहशतगर्द' में देश का सामयिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक वातावरण देखने को मिलता हैं।

लेखक उपन्यासकार देशदीपक त्रिपाठी ने साम्प्रदायिकता के आधार पर देश विभाजन की बनती हुई पृष्ठभूमि, उग्र होती हुई साम्प्रदायिकता, विभाजन के परिणामस्वरूप दोनों तरफ का नरसंहार, लोगों बीच बढ़ती हुई दूरी, आपसी अविश्वास, मानवीय मूल्यों का पतन आदि ज्वलंत विषयों को कथा सूत्र में सावधानीपूर्वक पिरोया है। जनसमुदाय की मानसिक जड़ता पर लेखक ने बखूबी ध्यान दिया है। साम्प्रदायिक चेतना के सुनियोजित प्रयास उपन्यासकार देशदीपक त्रिपाठी ने किया है। मुसलमानों ने हजारों हिन्दू भाईयों का कत्ल कर डाला, सैंकड़ों बहू-बेटियों को बेइज्जत कर डाला है। साम्प्रदायिकता का आर्थिक और राजनीतिक आधार घटनाओं में देखने को मिलता है। घर-बार ही नहीं रहेगा तो मुल्क का क्या बनाएंगे? साम्प्रदायिक विचारों का खण्डन गली की औरतें ही करती है। मुसलमान साम्प्रदायिक तत्व मुसलमानों को साम्प्रदायिक शिक्षा दे रहे थे। पात्र हथियार इकट्ठे करने की योजनाएं बन रहे हैं। यकीन रखिए यहां दंगे की आग भड़केगी कि ज्यादा खून होगा। लोग एक-दूसरे के सम्प्रदाय के विरूद्ध होने लगे थे। आंदोलन से साम्प्रदायिकता की आग फैलती चली गई । साम्प्रदायिक उत्तेजना से भरी राजनीति और साम्प्रदायिक घृणा और द्वेष का तूफान क्षितिज पर उठ रहा हैं। यह तूफान सार्वजनिक नागरिक जीवन का अंत कर देगा। शासन की जिम्मेवारी तय नहीं थी। साम्प्रदायिकता का राजनीतिक स्वरूप फैलाने लग गया। कांग्रेस, अकाली और हिन्दू महासभा के मैम्बर जब असेम्बली चैम्बर से बाहर निकले तब मुस्लिम लीगियों ने कुछ अपशब्द कहने लगे। परिणाम हुआ विभाजन और निर्दोशों की हत्या।

लाहौर के पाकिस्तान में विलय का समाचार सुनकर हिन्दुओं ने लाहौर छोड़ने का निर्णय कर लिया। लेकिन लोग लाहौर छोड़ने को तैयार नहीं थे। जो लोग उनके रक्षक बनने का वचन देते है, वही उनके भक्षक बन जाते हैं। इस आग ने उच्च वर्ग को भी अपनी चपेट में ले लिया। ये लोग भी अपनी दोस्ती तोड़ने को तैयार नहीं थे। गांधी जी के प्रयत्नों से न तो हिन्दू खुश थे और न ही मुसलमान। उपन्यासकार देशदीपक त्रिपाठी ने विभाजन की पीड़ा को चित्रित किया है। निरीह लोगों को घसीट-घसीटकर गोली मार दी गई,सम्पति लूट ली गई। 'सूअर के बच्चे'कहकर 'कत्ले आम' के फतवे विभाजन के प्रमुख कारण बने। [१] पन्द्रह अगस्त को पाकिस्तान बन गया। इसके बाद सीमा में प्रवेश- निषेध। कोई प्रवेश करेगा, तो जिन्ना का उसे गोली मार देना भी अन्तर्राष्ट्रीय न्याय होगा। अंतर्राष्ट्रीय न्याय से, पाकिस्तान के विरूद्ध सैनिक कार्यवाही करने का अधिकार नहीं होगा।

इन सबका दुष्परिणाम स्त्रियों पर काफी ज्यादा पड़ा। उन पर हुआ अत्याचार अकल्पनीय है। चुंगल में फंसी महिलाएं इसका उदाहरण है। इससे मनुष्य की नीच मनोवृति का पता चलता है। इन सबके चलते देश विभाजन भी हो गया। हिन्दुओं को खासकर पश्चिम से आए हिन्दुओं को मुसलमानों की भारतभक्ति अच्छी नहीं लग रही थी।

सम्यक् आकलन करते हुए रामदरश मिश्र लिखते है

''इतना ही नहीं पुरूष और नारी, दोनों में यह जहां कर्मठता उभरी, वहीं धूर्तता, असत्यप्रियता और चोरी का भी उदय हुआ और होते-होते यह एक स्थायी भाव बन गया। इस प्रकार नयी परिस्थिति और परिवेश में नवीन आवष्यकताओं के कारण शरणार्थियों में तो जीवन मान बदले ही, साथ ही साथ यहां के समाज के जीवन मान को भी उन्होनें प्रभावित किया।'' [२]

उपन्यासकार बहुत ही तीखे ढंग से विभाजन की पीड़ा को एक छिपे हुए व्यंग्य की नोक से कुरेद देता है। स्वतंत्रता को दिखावटी तौर पर जीते रहने का दम्भ भरना और बात है और विभाजन के खतरों का सामना करना दूसरी बात है।' विभाजित वर्ग' के दिमाग में ज्यादा और से उभर आती हैं और स्वयमेव एक लम्बी सांस छूट जाती है। उनके घर में तो मौसम, मच्छर, बच्चों की पैदाइश, रिश्तेदारी की बहुओं, चूल्हा चौका तथा वर्तमान का कचूमर निकाल देने वाले भव्य अतीत के दिव्य पुरूषों का ही भय है। [३] देशदीपक त्रिपाठी कृत 'दहशतगर्द' उपन्यास में विभाजन की पीड़ा के वभिन्न कारणों का विश्लेषण किया गया है। यह निरन्तर परिवर्तित होती रहती है। इसके अन्तर्गत मानवीय सम्बन्धों की पूर्ण जटिलता या संकुलता निहित है, चाहे वे सम्बन्ध साध्य साधन, स्वाभाविक, प्रतीकात्मक अथवा क्रियाओं से उत्पन्न हो। कोई भी व्यक्ति समाज से अलग नहीं है। घने बीहड़ों में निवास करने वाले साधु-सन्यासी भी समाज के दायरे में ही आते हैं। [४] नाथों, सिद्धों और अन्याय ऐसे वैरागी साधुओं ने समाज से एक निश्चित दूरी रखी, परन्तु वे फिर भी किसी न किसी रूप में समाज से सम्बन्ध रहे और समाज भी उनसे प्रेरणाएं पाता रहा है। देशदीपक त्रिपाठी स्वयं भी समाज का अभिन्न अंग है और

उसके अधिकांश विषय भी सामाजिक विभाजन से जुड़े हैं–

'इसी तरह बीस वर्ष बीते।
मध्यावधि चुनाव होते रे।
अल्पमत की सरकारें आती–जाती रही!
परन्तु, सिन्धुस्तान, खाकिस्तान के विरूद्ध कोई भी प्रभावी कार्यवाही न कर सका!
'हाँ इतना जरूर हुआ था कि सिन्धुस्तानी फौज़ मासूम प्रान्त में तैनात कर दी गई थीं,
और वे दहशत गर्द सिन्धुस्तानी फौजों से अक्सर खूनी मुठभेडे करते रहते थे।
खाकिस्तान के एक तरफ सिन्धुस्तान था–
तो दूसरी तरफ था–
'गान' मुल्क!

वे पूरा मुल्क भी खाकी मज़हब मानने वालों का मुल्क था। वहां की ज्यादातर आबादी–लम्बी, चौड़ी, गोरी–हँसमुख और स्वतंत्रता–प्रेमी थी। परन्तु उनमें से कुछ आबादी जो कट्टरपंथियों की थी, वो कट्टरपंथी आबादी खाकिस्तान की कट्टरपंथी 'खाकी' आबादी से बहुत ज्यादा बर्बर और क्रूर थी। दस वर्ष बीतते–बीतते खाकिस्तान के मंसूबे इस कदर बढ गए कि 'वे' मासूम प्रान्त में दहशतगर्दी फेलाने के लिए इन कट्टरपंथी, बर्बर एवं क्रूर गानियों की मदद लेने लगे। [५] वह समाज का तिरस्कार नहीं कर सकता। देशदीपक त्रिपाठी ने 'दहशतगर्द' उपन्यास में विभाजन की विभिन्न स्थितियों को कथ्य का आधार बनाया है–'कोई ढ़ंग का सिन्धू परिवार न मिलने पर वे खाकी देहशतगर्द, अब 'वहाँ' के खाकी मजहब वालों के घरों में ही लूट पाट मचाने लगे, जिससे वहां की सारी आम जनता त्राहि–त्राहि कर उठी। जो 'काम' अब तक सिन्धू आबादी के साथ होता आया था; 'उनके' न मिलने पर अब वही काम वहाँ की खाकी मजहब वाली आबादी के साथ होने लगा। [६]

इनकी रचना धर्मिता में युग और समाज के विभाजन की संवेदना है। समाज में व्याप्त समस्याएँ रचना को व्यापकता प्रदान करती है। युग की परिस्थितियाँ रचनाकार की चेतना को रूपायित भी करती है। कोई भी रचना युग के संदर्भ से अलग रखकर नहीं आंकी जा सकती एवं न ही उसका कोई स्थायी महत्त्व होता है। एक उदाहरण देखिए.

'फिर कस्बे! एक कस्बे से दूसरे कस्बे!
फिर शहर। एक शहर से दूसरे शहर!
फिर पूरा प्रान्त।
फिर पूरा देश!'
'और फिर–पूरा विश्व!'

तदंतर विकास पाकर समाज, धर्म और संस्कृति इत्यादि से जुड़ जाती है। पंत का यह विचार है कि कोई भी महान कलाकार न तो पूर्णरूपेण वस्तुनिष्ठ होता है और न ही पूर्णरूपेण आत्मनिष्ठ। विभाजित के प्रति पीड़ा का बीज कलाकार की निजी संवेदनशीलता में ही होता है, परंतु जब वह बीज कलाकृति रूपी पुष्प का रूप धारण करता है तो वह पूर्ण रूप से वस्तुनिष्ठ हो जाता है। साहित्य को जनता की संचित चित्तवृतियों का प्रतिबिम्ब कहा जाता है। 'जनता' शब्द के मूल में व्यक्ति ही है, उसी की संवेदनाएं संचित होकर साहित्य बनती है। व्यक्ति के निजी अनुभव, राग–विराग, सुख–दुःख, तनाव–दवाब, आशा–निराशा, इच्छा–अनिच्छा, प्रेम–विरह, विश्वास–धोखे, संघर्ष–पलायन इत्यादि उसके मन को उद्वेलित कर देते हैं।[७] देशदीपक त्रिपाठी ने 'दहशतगर्द' उपन्यास में अनुभव ही विचारों से पुष्ट होकर संवेदनाओं का रूप पाकर विभाजन में अभिव्यक्त हुए हैं–

'अच्छा?'
'हाँ देवव्रत साहब!'
'लेकिन बिटिया! वे दुष्ट खाकी...।'
देवव्रत की बात काटते हुए वो छाया बोल उठी–

आप उनकी चिन्ता न करें। उनकी नीति ही उन्हें खा जाएगी। वे खुद अपने हाथों अपना सर्वनाश कर डालेंगे। उन दुष्टों की कुकृत्यों में आप भागीदार न बनें। उन दुष्टों के नाश के लिए इस दुनिया में उनसे भी कई ताकतवर और महादुष्ट बैठे हुए हैं।

'देवव्रत साहब! मैं अपने ऊर्जा के इस स्तर से प्रत्यक्ष देख रही हूं कि –आज से ग्यारह वर्ष, आठ महीने बाद वे दुष्ट 'खाकी' अपने आपको सर्वशक्तिमान समझते हुए, इस दुनिया के एक अत्यंत शक्तिशाली देश से जा भिडेंगे और इसके प्रतिफल में 'वो' शक्तिशाली देश 'उनको' कुकृत्यों का पूरा मजा चखा देगा, फिर बाकी का काम...।[८]

रचना आत्मनिष्ठ होते हुए भी वस्तुनिष्ठ होती है। वस्तुनिष्ठ होते हुए भी आत्मनिष्ठ है। अतः स्पष्ट है कि समूचे काव्य के बीच व्यक्ति कहीं नितांत अकेला, कुण्ठित, स्वार्थी, असुरक्षित, निराश दिखाई देता है तथा कहीं, आशावान और आनन्दित। उपरोक्त तथ्यों को ही विभाजन का आधार बनाया जाता है।'यानि अपने पड़ोसियों से मिल–जुलकर रहने के तथ्य का सार विश्व बन्धुत्व सुनता की भावना को प्रेरित करता है, तो ऐसे मज़हब में ये खून–खराबा, मारने–काटने; और मासूम लड़कियों की इज्जत लूटनें वाली बात कहां से आ जाती हैं। देवव्रेत साहब! ये उन खाकिस्तानी सरकार के कुछ चन्द प्रभावशाली धर्मांध गुर्गों की ऐसी बेहद नापाक और घिनौनी साजिश का हिस्सा है, जिसके चलते कभी भी वे सारे निर्दोश खाकिस्तानी आवाम भी भयंकर संकट में पड़ सकते हैं।' [९]

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि विभाजित–वर्ग अपने विचारों में उलझा था। कहाँ से प्रारम्भ करे अपनी जिंदगी। सब ओर वैचारिक दरिद्रता है। सभी राजनीतिक दलों की एक विचारधारा होती थी, कैडरों का एक चरित्र होता था। कोई कहता था कि अमुक आदमी विभाजित है तो उसका मतलब होता था कि वह जातिवाद, धर्मवाद और रूढ़िवाद से अलग होगा। वैज्ञानिक भौतिकवादी होगा। देशदीपक त्रिपाठी ने 'दहशतगर्द' उपन्यास में विभाजन की समस्या को मूल रुप से उठाया है।

संदर्भ

1. देशदीपक त्रिपाठी 'दहशतगर्द' पृ० २२–२३
2. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, पृ.१४४
3. लुटे–पिटे,भयंकर आर्तनाद करते वे मजलूम लोग,वे शरणार्थी'– देशदीपक त्रिपाठी 'दहशतगर्द'पृ०६५

4. आर.एम. मैकलेवर एण्ड सी.एच.पेज, सोसायटी पृ० ३
5. देशदीपक त्रिपाठी, 'दहशतगर्द', पृ० ८६
6. देशदीपक त्रिपाठी, 'दहशतगर्द', पृ० ८६
7. डॉ० युद्धवीर धवन, हिन्दी की आधुनिक लंबी कविताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ० ७७
8. देशदीपक त्रिपाठी, 'दहशतगर्द', पृ० ८५
9. देशदीपक त्रिपाठी, 'दहशतगर्द', पृ० ६८